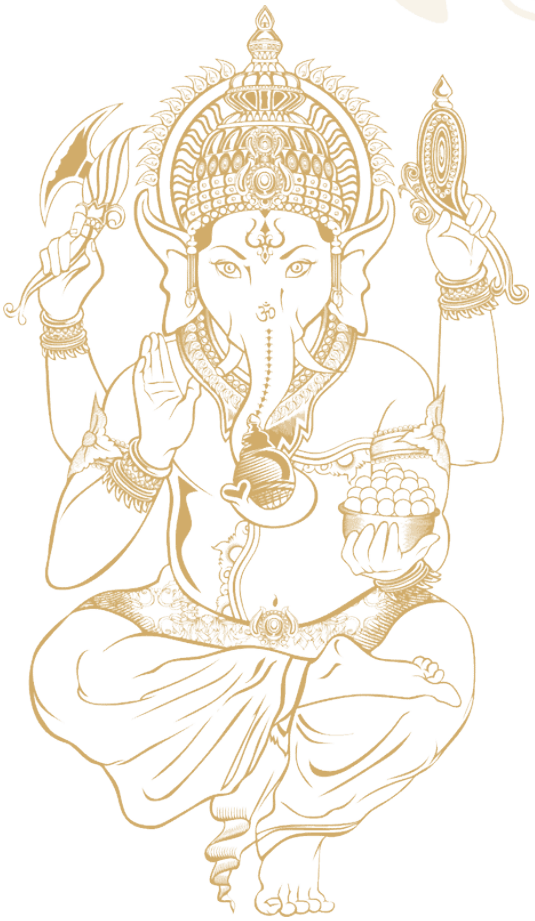

Sachin

Mohini

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121760101

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121760101 Date: 30/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29-30/09/1996	जन्म तिथि	23/05/1999
रवि-सोमवार	दिन	रविवार
घंटे 05:40:00	जन्म समय	07:40:00 घंटे
घटी 58:21:31	जन्म समय(घटी)	04:45:31 घटी
India	देश	India
Dhar	स्थान	Indore
22:32:00 उत्तर	अक्षांश	22:42:00 उत्तर
75:24:00 पूर्व	रेखांश	75:54:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:28:24	स्थानिक संस्कार	-00:26:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:19:23	सूर्योदय	05:43:29
18:16:40	सूर्यास्त	19:02:58
23:48:44	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:42

कन्या	लग्न	मिथुन
बुध	लग्न लग्नाधिपति	बुध
मेष	राशि	सिंह
मंगल	राशि-स्वामी	सूर्य
भरणी	नक्षत्र	पू०फाल्गुनी
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	शुक्र
3	चरण	2
हर्षण	योग	हर्षण
बव	करण	बालव
ले-लेखपाल	जन्म नामाक्षर	टा-टपकेश्वरी
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन
क्षत्रिय	वर्ण	क्षत्रिय
चतुष्पाद	वश्य	वनचर
गज	योनि	मूषक
मनुष्य	गण	मनुष्य
मध्य	नाड़ी	मध्य
मृग	वर्ग	श्वान

श्री संकटमोचन ज्योतिष केंद्र
नरसिंह मंदिर,कलाल घाट,तोड़ा,सांवेर(जिला)इंदौर
वैदिक पंडित पंकज मंडलोई ज्योतिष आचार्य
+91 9893119214
pandit11317@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 8वर्ष 8मा 20दि		03:20:55	कन्या	लग्न	मिथु	05:19:48	शुक्र 13वर्ष 2मा 26दि	
मंगल		13:18:08	कन्या	सूर्य	वृष	07:41:23	चन्द्र	
21/06/2021		20:51:04	मेष	चंद्र	सिंह	17:50:24	18/08/2018	
21/06/2028		18:35:59	कर्क	मंगलव	तुला	01:35:35	18/08/2028	
मंगल	17/11/2021	26:05:40	सिंह	बुध	वृष	04:24:53	चन्द्र	19/06/2019
राहु	06/12/2022	15:05:45	धनु	गुरु	मीन	29:17:09	मंगल	18/01/2020
गुरु	12/11/2023	01:26:01	सिंह	शुक्र	मिथु	21:53:47	राहु	18/07/2021
शनि	20/12/2024	09:54:14	मीन व	शनि	मेष	16:08:08	गुरु	17/11/2022
बुध	18/12/2025	14:10:36	कन्या	राहु व	कर्क	22:24:30	शनि	18/06/2024
केतु	16/05/2026	14:10:36	मीन	केतु व	मक	22:24:30	बुध	17/11/2025
शुक्र	16/07/2027	06:52:18	मक व	हर्ष व	मक	22:56:52	केतु	18/06/2026
सूर्य	21/11/2027	01:10:36	मक व	नेप व	मक	10:27:14	शुक्र	17/02/2028
चन्द्र	21/06/2028	07:13:00	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	15:30:03	सूर्य	18/08/2028

व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:48:44 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:42

लग्न-चलित

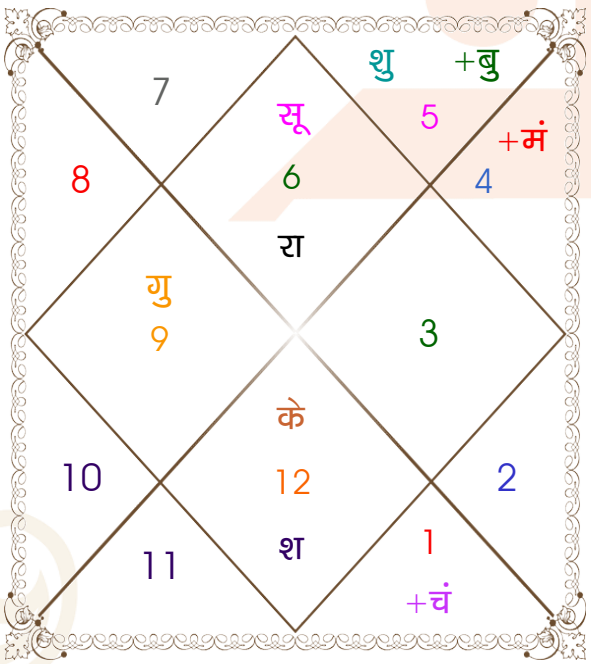

लग्न-चलित

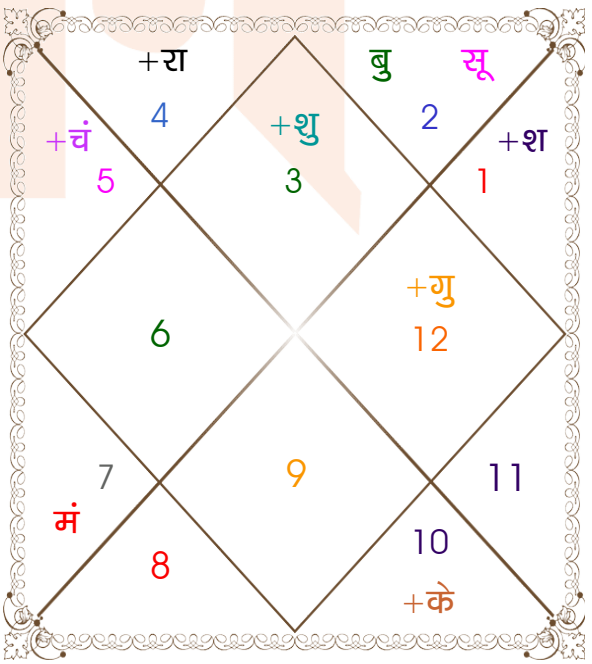

श्री संकटमोचन ज्योतिष केंद्र
नरसिंह मंदिर,कलाल घाट,तोड़ा,सांवेर(जिला)इंदौर
वैदिक पंडित पंकज मंडलोई ज्योतिष आचार्य
+91 9893119214
pandit11317@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गज	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	सिंह	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	17.00		

कुल : 17 / 36

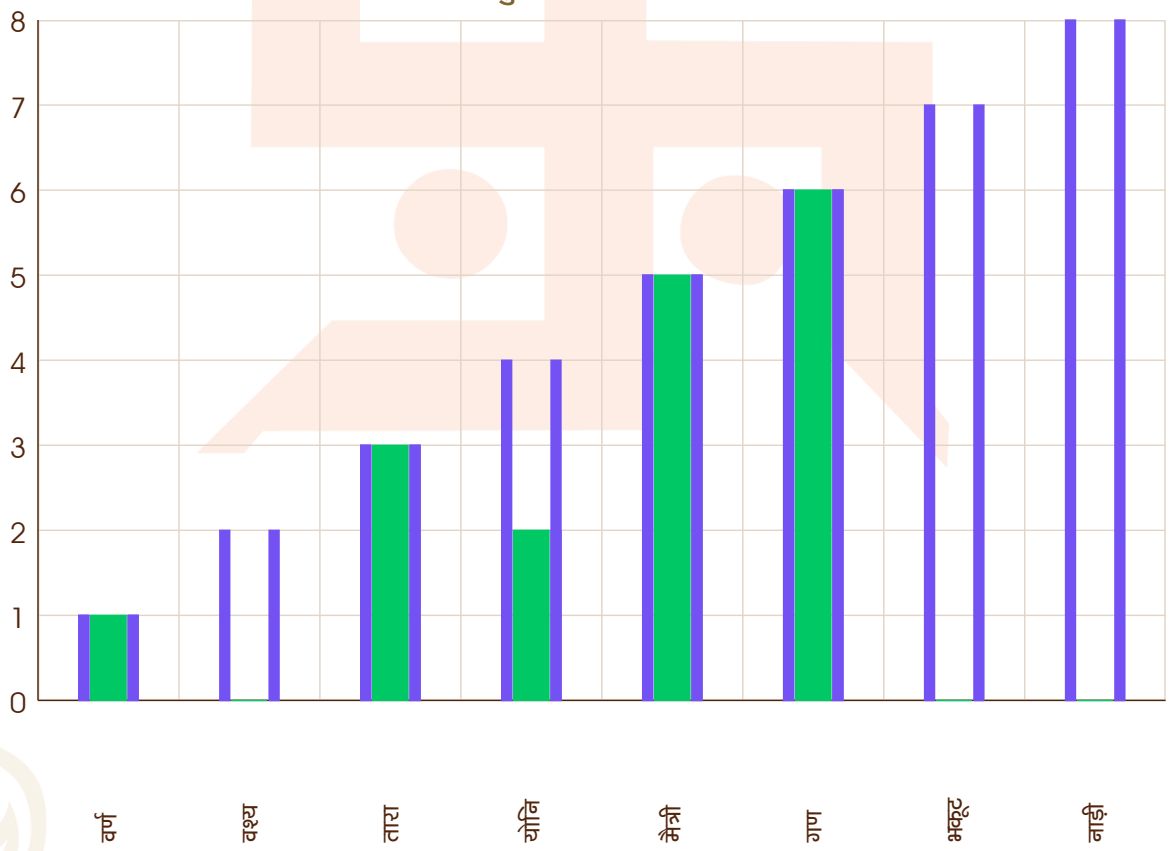

श्री संकटमोचन ज्योतिष केंद्र
नरसिंह मंदिर,कलाल घाट,तोड़ा,सांवेर(जिला)इंदौर
वैदिक पंडित पंकज मंडलोई ज्योतिष आचार्य
+91 9893119214
pandit11317@gmail.com

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

ैबीपद का वर्ग मृग है तथा डवीपदप का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसारैबीपद और डवीपदप का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

ैबीपद मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

डवीपदप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में पंचम् भाव में स्थित है।

ैबीपद तथा डवीपदप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ँबीपद का वर्ण क्षत्रिय तथा डवीपदप का वर्ण भी क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों ही दम्पत्ति अति ऊर्जावान, साहसी, उद्यमी होंगे साथ ही दोनों एक-दूसरे के साथ सद्भाव एवं प्रेम से जीवन बितायेंगे। इसके अतिरिक्त समय-समय पर एक-दूसरे की सहायता से सुखी एवं समृद्ध परिवार का निर्माण करने में योगदान देते रहेंगे।

वश्य

ँबीपद का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं डवीपदप का वश्य वनचर अर्थात सिंह (शेर) है। जिसके कारण यह मिलान अशुभ मिलान होगा। पशु हमेशा वनचरों (सिंह) के शिकार होत रहते हैं। पशुओं को हमेशा शेर से स्वयं की रक्षा करनी पड़ती है क्योंकि शेर, पशुओं को मारकर खा जाते हैं। इसी प्रकार यदिँ बीपद चतुष्पद एवं डवीपदप वनचर हो तो डवीपदप समय समय पर क्रूर स्वभाव, निर्दयी एवं हावी रहने वाली प्रवृत्ति की हो सकती है। फलस्वरूप डवीपदप ँबीपद पर कभी-कभी हावी रहेगी जोँ बीपद एवं उसके परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। डवीपदप का यह स्वभाव पूरी तरह से घर एवं परिवार की शांति को भंग कर सकता है तथा डवीपदप के असामान्य व्यवहार के कारण घर में अव्यवस्था एवं कोलाहल का माहौल रह सकता है।

तारा

ँबीपद की तारा जन्म तथा डवीपदप की तारा भी जन्म है। अतः समान तारा होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों में अगाध प्रेम, सहयोग आपसी विश्वास तथा समझदारी की भावना बनी रहेगी। साथ ही दोनों एक-दूसरे के विश्वास पात्र बने रहेंगे तथा पूर्ण सक्षमता से मिलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे। इनकी संतान बुद्धिमान, कर्त्तव्यपरायण तथा सफल होगी।

योनि

ँबीपद की योनि गज है तथा डवीपदप की योनि मूषक है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से

कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ँबीपद एवं डवीपदप दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदिं ँबीपद एवं डवीपदप के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारणं ँबीपद एवं डवीपदप जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

ँबीपद का गण मनुष्य तथा डवीपदप का गण भी मनुष्य ही है। अर्थात दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण दोनों के स्वभाव एक जैसे होंगे। दोनों भौतिक सुखों के आकांक्षी, परिश्रमी, बुद्धिमान, व्यावहारिक तथा मिलनसार रहेंगे। तथा साथ मिलकर अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

भकूट

ँबीपद से डवीपदप की राशि पंचम भाव में स्थित है तथा डवीपदप सें ँबीपद की राशि नवम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। दोनों के राशि स्वामियों में परस्पर मित्र होने के कारण नवम-पंचम दोष का परिहार होने के कारण विवाह को स्वीकृति प्रदान की जा सकती है किंतु भकूट मिलान में इसे 0 अंक/गुण प्रदान किया जायेगा। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े होते रह सकते हैं। जिसके कारण डवीपदप को संतानोत्पत्ति में भी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

नाड़ी

ँबीपद की नाड़ी मध्य है तथा डवीपदप की नाड़ी भी मध्य है। अर्थात दोनों की

नाड़ी समान हैं, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। यदि पति-पत्नी की समान नाड़ी मध्य ही होगी तो पति अथवा पत्नी में से किसी की मृत्यु की संभावना होती है। ऐसी स्थिति में ैबीपद एवं डवीपदप का विवाह अति घातक हो सकता है। आपकी संतान कमजोर, डरपोक, मानसिक रूप से असंतुलित, मानसिक बीमारी से ग्रस्त हो सकती हैं। अतः ऐसा विवाह पूर्णतः त्याज्य है।

मेलापक फलित

स्वभाव

ैबीपद की राशि मेष तथा डवीपदप की राशि सिंह है। ये दोनों राशियां अग्नितत्व से संबधित है। इसके प्रभाव से आपका जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा परन्तु तेजस्वी प्रवृति के कारण यदा कदा आप लोगों के मध्य विवाद भी होंगे परन्तु इनमें कोई अप्रिय स्थिति उत्पन्न नहीं होगी तथा आपसी सहमति से इनको दूर करने में समर्थ होंगे।

ैबीपद और डवीपदप दोनों के राशि स्वामी मंगल तथा सूर्य मित्र है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह स्थिति शुभ रहेगी तथाैबीपद और डवीपदप दोनों अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति उत्साह, पराक्रम एवं बुद्धिमता के गुणों से पूर्ण करेंगे। यद्यपिैबीपद डवीपदप को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा उदारता एवं आदर्श के भाव से युक्त रहेंगे परन्तु यदा कदाैबीपद की डवीपदप के प्रति उपेक्षा की भावना रहेगी तो वह स्वार्थी होने का उनके ऊपर दोषारोपण करेंगी लेकिन कुछ समय बाद स्थिति ठीक हो जाएगी।

ैबीपद और डवीपदप दोनों की राशियां परस्पर पंचम नवम भाव में पड़ती है जो शास्त्रानुसार भकूट दोष है। अतः इससे दोनों में परस्पर ईर्ष्या एवं अभिमान की भावना रहेगी। इसका प्रभाव इनके दाम्पत्य जीवन पर पड़ेगा। साथ ही दोनों मुक्त प्रेम प्रदर्शन पर भी विश्वास करेंगे। इससे इनके मन में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या के भाव की उत्पति होगी जिसका भविष्य में अच्छा असर नहीं होगा। अतः ऐसी प्रवृतियों की उपेक्षा से ही सुख एवं शांति के क्षण प्राप्त हो सकते है।

ैबीपद का वश्य चतुष्पद एवं डवीपदप का वश्य वनचर है अतः इनकी परस्पर समानता के कारण इनकी कामेच्छाएं समान स्तर की होंगी तथा एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में सन्तुष्ट होंगे। यद्यपि डवीपदप की पूर्व प्रेम स्मृतियों के कारणैबीपद किंचित ईर्ष्या की अनुभूति करेंगे परन्तु आपसी सामजंस्य से इसमें अनुकूलता रहेगी।

आप दोनों का वर्ण क्षत्रिय है। अतः कार्य क्षमता एवं कार्य क्षेत्रों में समानता रहेगी तथा उत्साह, साहस , पराक्रम तथा परिश्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगे जिससे कार्य क्षेत्र की सुदृढ़ता नित्य उन्नति की ओर अग्रसर रहेगी।

धन

ैबीपद और डवीपदप का जन्म एक ही तारा 'जनम' में हुआ है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। साथ ही भकूट एवं मंगल का प्रभाव भी आर्थिक स्थिति पर सामान्य ही रहेगा। अतः अपने वर्तमान स्रोतों से परिश्रम पूर्वक धनऐश्वर्य की प्राप्ति होती रहेगी जिससे लाभ मार्ग सामान्यतया प्रश्स्त होंगे तथा आर्थिक स्थिति सेंैबीपद और डवीपदप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

ैबीपद को पैतृक सम्पति तथा जायदाद की प्राप्ति होगी। अतः आजीवन वे धन धान्य से युक्त रहेंगे तथा अपनी प्रतिभा, योग्यता एवं परिश्रम से उसमें उतरोत्तर वृद्धि करने में समर्थ होंगे । इस प्रकार भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते हुए वे अपना समय आनंद पूर्वक व्यतीत करेंगे।

स्वास्थ्य

ैबीपद और डवीपदप दोनों की नाड़ी मध्य है। अतः इन दोनों पर नाड़ी दोष का प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से दोनों का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। इससेैबीपद और डवीपदप दोनों उदर संबंधी कष्ट प्राप्त करेंगे जिससे लीवर विशेष प्रभावित रहेगा। परन्तु मंगल का इनके स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः इससे कष्ट की गंभीरता में न्यूनता आएगी परन्तु सामान्य कष्ट वे समय समय पर प्राप्त करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस दोष के प्रभाव सेैबीपद को धातु संबंधी तथा डवीपदप को मासिक धर्म संबधी परेशानी हो सकती है। अतः उत्तम वैवाहिक दृष्टि से यह मिलान अनुकूल नहीं होगा जिससे यत्नपूर्वक इसकी उपेक्षा करनी चाहिए।

संतान

यथोचित समय में संतति प्राप्ति के लिएैबीपद और डवीपदप का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार से अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म के मध्य भी उचित अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित रूप से करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्तैबीपद और डवीपदप के कन्या तथा पुत्र संततियों की संख्या समान रहेगी।

डवीपदप का प्रसव सामान्य रूप से नहीं होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार से परेशानी या समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यह समस्या गर्भपात के रूप में भी हो सकती है। अतः उन्हें गर्भावस्था के मध्य अपना डाक्टरी परीक्षण नियमित रूप से करवाते रहना चाहिए। इस प्रकार वह सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देंगी तथा स्वयं भी स्वस्थ एवं शांति की अनुभूति करेंगी।

ैबीपद और डवीपदप को बच्चों की ओर से पूर्ण सन्तुष्टि प्राप्त होगी तथा बच्चे भी अपने क्षेत्र में स्व बुद्धिमता योग्यता एवं व्यवहार कुशलता से प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। माता पिता के वे आज्ञाकारी होगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। साथ ही माता पिता के प्रति उनके मन में समान लगाव रहेगा। इस प्रकारैबीपद और डवीपदप अपने योग्य एवं बुद्धिमान बच्चों पर गर्व करेंगे तथा सुख शांति एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

डवीपदप के अपनी ससुराल के लोगों से संबधों में वांछित मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा सास से कुछ मतभेद रहेगा जिससे उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने में

कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तथापि यदि डवीपदप धैर्य एवं बुद्धिमता से कार्य लें तो सास की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है।

ससुर देवर एवं ननदों से डवीपदप के संबध मधुर रहेंगे तथा उनसे वांछित स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। ससुर की सुख सविधा एवं आराम का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा वे भी उसकी सेवा भावना से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननद से भी डवीपदप का व्यवहार मित्रता पूर्ण रहेगा तथा वे भी डवीपदप से प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार वह ससुराल के लोगों से सामंजस्य स्थापित करके आनंदानुभूति प्राप्त करेंगी।

ससुराल-श्री

ैबीपद तथा उनकी सास के संबधों में सामान्यतया मधुरता ही रहेगी। साथ ही आपस में किसी प्रकार के मतभेद या तनाव के भाव की न्यूनता रहेगी। वे अपनी सास के प्रति श्रद्धा तथा सम्मानजनक व्यवहार रखेंगे तथा उन्हें अपनी माता के समान ही आदर प्रदान करेंगे। साथ ही सपत्नीक वह समय समय पर ससुराल के लोगों से मिलने जाया करेंगे।

लेकिन ससुर के साथ मेंैबीपद के संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण दोनों के मध्य काफी वैचारिक विभिन्नता तथा अन्य मतभेद रहेंगे परन्तु यदि परस्पर सामंजस्य एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन किया जाय तो इनमें न्यूनता आ सकती है। साथ ही साले एवं सालियों सेैबीपद के संबध अच्छे रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग, स्नेह तथा सहानुभूति प्राप्त होगी एवं परस्पर मित्रता का भाव रहेगा। इस प्रकार ससुराल के पक्ष का दृष्टिकोणैबीपद के प्रति उत्साहवर्द्धक नहीं रहेगा तथा सामंजस्य से ही इसमें अनुकूलता वनी रहेगी।